Media Coverage Overview

Press Release: AIIMS leads the change in celiac disease management with the 1st Asian Pacific Celiac Disease Symposium 2024

Total media impression: 17

DATE	PUBLICATION	HEADLINE
March 13, 2024	THE HealthSite.com	AIIMS Symposium Sheds Light On Celiac Disease: Expert Tips On Treatment And Management
March 13, 2024	BioVoice Get Heard! www.biovoicenews.com	AIIMS leads change in celiac disease management with 1st Asian Pacific Celiac Disease Symposium 2024
March 11, 2024	MedLarge	AIIMS leads the change in celiac disease management
March 11, 2024	RJS POSITIVE MEDIA 2.31K subscribers	AIIMS LEADS THE CHANGE IN CELIAC DIDEASE MANAGEMENT - Dr.Govind Makharia
March 09, 2024	tv9 भारतवर्ष	यदि आप सीलिएक के मरीज हैं, तो गेहूं से करें परहेज वरना जा सकती है जान
March 14, 2024	दैनिक भास्कर	AIIMS leads change in celiac disease management with 1st Asian Pacific Celiac Disease Symposium 2024
March 12, 2024	पंजाब केसरी	AIIMS: Wheat bread also increases the risk of celiac disease for some people
March 10, 2024	शाह टाइम्स	First Asian Celiac Disease Symposium held
March 10, 2024	Swastik Sahara	AIIMS leads transformation in celiac disease management with 1st Asian Pacific Celiac Disease Symposium 2024
March 10, 2024	**Control India**	Demand for solutions increased as awareness of celiac disease increased

March 10, 2024	मयूर संवाद	AIIMS leads change in celiac disease management with 1st Asian Pacific Celiac Disease Symposium 2024
March 11, 2024	विराट वैभव	Spread awareness about celiac disease
March 11, 2024	NEWS लोक भारत अब सच से हटेगा पर्दा ...	Initiative to Change Celiac Disease Management
March 23, 2024	The Print	Dr Makharia's video interview titled 'What is Celiac disease, when should you get tested for it & how can it be treated?' https://www.youtube.com/watch?v=K1Bc0Q5OUVs
March 19, 2024	**The Pioneer**	published the story titled 'Surge in Celiac Disease: Calls for Awarness' https://www.dailypioneer.com/2024/columnists/surge-in-celiac-disease-calls-for-awareness.html
March 16, 2024	**DD News Morning Show**	Highlights from APCDS 1st Meet in New Delhi https://youtu.be/NilAFqjfH6I?si=ZYKqcJvC_OZFDm9a
April 12, 2024	**Celiac.com**	Raising Awareness of Celiac Disease in Asia https://www.celiac.com/celiac-disease/raising-awareness-of-celiac-disease-in-asia-r6511/

Print Clips

दैनिक भास्कर

Publication	Dainik Bhaskar
Date	14th March 2024
Headline	AIIMS leads change in celiac disease management with 1st Asian Pacific Celiac Disease Symposium 2024

प्रथम एशियाई प्रशांत सीलिएक रोग संगोष्ठी 2024 के साथ एम्स सीलिएक रोग प्रबंधन में बदलाव का नेतृत्व किया

भास्कर समाचार सेवा

नई दिल्ली। सीलिएक रोग के प्रबंधन, निदान और उपचार के महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने वाला पहला एशियाई प्रशांत सीलिएक रोग संगोष्ठी एपीसीडीएस 2024 हाल ही में नई दिल्ली में शुरू किया गया था। पहले दिन आयोजित सत्रों ने इस स्थिति के प्रबंधन में समय पर निदान और नवाचार के महत्व को रेखांकित किया।

संगोष्ठी का आयोजन एम्स द्वारा एशिया पैसिफिक एसोसिएशन ऑफ गैस्ट्रोएंटरोलॉजी एपीएजीई और इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर द स्टडी ऑफ सेलियाक डिजीज आईएसएससीडी के सहयोग से किया जा रहा है।

पंजाब केसरी

Publication	Punjab Kesari
Date	12th March 2024
Headline	AIIMS: Wheat bread also increases the risk of celiac disease for some people

सीलिएक रोग के प्रति जागरूकता बढ़ाने की उठी मांग

एम्सः गेंहू की रोटी भी कुछ लोगों के लिए बढ़ाती है सीलिएक डिजीज का खतरा

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी) : गेंहू या जौ की रोटी भी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। जिन लोगों को इससे एलर्जी है यह उनकी आंत को खराब कर सकती है। एम्स के गेस्ट्रोइंटेरलॉजी विभाग के प्रोफेसर की माने तो पेट भरने के काम आने वाली गेंहू भी कुछ लोगों के स्वास्थ्य को खराब कर सकता है। इसका मतलब यह नहीं कि गेंहू या जौ खाना स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं है।

अधिकतर जेनेटिक कारणों से कुछ लोग ऑटो इम्यून सिलिएक बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं जो उनके शारीरिक विकास को अवरूद्ध कर सकता है। इस बीमारी के बारे में जागरूकता लाने के लिए एम्स द्वारा एशिया पैसिफिक एसोसिएशन ऑफ गैस्ट्रोएंटरोलॉजी (एपीएजीई) और इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर द स्टडी ऑफ सेलियाक डिजीज (आईएसएससीडी) के सहयोग से एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें एम्स के गैस्ट्रोएंटरोलॉजी और मानव पोषण विभाग के प्रोफेसर डॉ गोविंद मखाड़िया भी विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद थे। उन्होंने बताया कि सीलिएक रोग, ग्लूटेन के सेवन के कारण छोटी आंत को प्रभावित करने वाला एक ऑटोइम्यून विकार है। इसमें छोटी आंत खराब हो जाती है जिसका असर शरीर के दूसरे अंगों पर भी पड़ता है। एशिया में यह असामान्य माना जाता है। हाल के अध्ययन,जिनमें एम्स द्वारा किए गए अध्ययन भी शामिल हैं, कई एशियाईदेशों में सीलिएक रोग के अस्तित्व का खुलासा हुआ है। माना जाता है कि भारत मेंअनुमानित 60 से 80 लाख लोग इस बीमारी के साथ जी रहे हैं।

Publication	Shah Times
Date	10th March 2024
Headline	First Asian Celiac Disease Symposium held

पहली एशियाई सीलिएक रोग संगोष्ठी आयोजित

नई दिल्ली। सीलिएक रोग के प्रबंधन, निदान और उपचार के महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने वाला पहला एशियाई प्रशांत सीलिएक रोग संगोष्ठी (एपीसीडीएस २०२४) हाल ही में नई दिल्ली में शुरू किया गया । पहले दिन आयोजित सत्रों ने इस स्थिति के प्रबंधन में समय पर निदान और नवाचार के महत्व को रेखांकित किया। संगोष्ठी का आयोजन एम्स द्वारा एशिया पैसिफिक एसोसिएशन ऑफ गैस्ट्रोएंटरोलॉजी (एपीएजीई) और इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर द स्टडी ऑफ सेलियाक डिजीज(आईएसएससीडी) के सहयोग से किया जा रहा है। इस बारे में बोलते हुए, एम्स के गैस्ट्रोएंटरोलॉजी और मानव पोषण विभाग के प्रोफेसर डॉ गोविंद मखारिया ने कहा, "प्रथम एशियाई प्रशांत सीलिएक रोग संगोष्ठी ने हमारे क्षेत्र में सीलिएक रोग की उभरती चुनौतियों पर चर्चा करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान किया है।

Publication	Swastik Sahara
Date	10th March 2024
Headline	AIIMS leads transformation in celiac disease management with 1st Asian Pacific Celiac Disease Symposium 2024

प्रथम एशियाई प्रशांत सीलिएक रोग संगोष्ठी 2024 के साथ एम्स सीलिएक रोग प्रबंधन में बदलाव का नेतृत्व किया

सीलिएक रोग के प्रति जागरूकता बढ़ने से समाधान की मांग बढ़ी है

स्वास्तिक सहारा ब्यूरो

नई दिल्ली। सीलिएक रोग के प्रबंधन, निदान और उपचार के महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने वाला पहला एशियाई प्रशांत सीलिएक रोग संगोष्ठी (एपीसीडीएस 2024) हाल ही में नई दिल्ली में शुरू किया गया था। पहले दिन आयोजित सत्रों ने इस स्थिति के प्रबंधन में समय पर निदान और नवाचार के महत्व को रेखांकित किया।

संगोष्ठी का आयोजन एम्स द्वारा एशिया पैसिफिक एसोसिएशन ऑफ गैस्ट्रोएंटरोलॉजी (एपीएजीई) और इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर द स्टडी ऑफ सेलियाक डिजीज (आईएसएससीडी) के सहयोग से किया जा रहा है। सीलिएक रोग, ग्लूटेन के सेवन के कारण छोटी आंत को प्रभावित करने वाला एक ऑटोइम्यून विकार है, जिसके वैश्विक प्रसार में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। एशिया में यह असामान्य माना जाता है, हाल के अध्ययन, जिनमें एम्स द्वारा किए गए अध्ययन भी शामिल हैं, कई एशियाई देशों में सीलिएक रोग के अस्तित्व का खुलासा करते हैं। माना जाता है कि भारत में अनुमानित 6 से 8 मिलियन लोग इस स्थिति के साथ जी रहे हैं। देश में रोगियों की पर्याप्त संख्या के बावजूद, केवल एक छोटे प्रतिशत को ही औपचारिक निदान प्राप्त हुआ है।

एपीसीडीएस 2024 एशिया-प्रशांत क्षेत्र में सीलिएक रोग के बढ़ते प्रसार पर चर्चा करने के लिए प्रमुख विशेषज्ञों, स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों और हितधारकों को एक साथ लाता है। इसका उद्देश्य महामारी विज्ञान, निदान, मानदंड और प्रबंधन में उभरती चुनौतियों और अवसरों का समाधान करना है। यूरोप और अमेरिका में प्रमुखता के बाद भारत जैसे एशियाई देशों में मामलों में वृद्धि के साथ, संगोष्ठी गहन चर्चा के लिए एक महत्वपूर्ण मंच होगी, जो स्थिति को सबसे आगे रखेगी और समय पर निदान और प्रबंधन की आवश्यकता होगी।

इस बारे में बोलते हुए, एम्स के गैस्ट्रोएंटरोलॉजी और मानव पोषण विभाग के प्रोफेसर डॉ गोविंद मखारिया ने कहा, ह्लप्रथम एशियाई प्रशांत सीलिएक रोग संगोष्ठी ने हमारे क्षेत्र में सीलिएक रोग की उभरती चुनौतियों पर चर्चा करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान किया है। जागरूकता बढ़ाने और निदान एवं उपचार क्षमताओं को बढ़ाने के प्रयासों की आवश्यकता है। सीलिएक रोग कोई सीमा नहीं जानता, और संगोष्ठी ने इस वैश्विक स्वास्थ्य मुद्दे के समाधान के लिए एकजुट मोर्चे की आवश्यकता पर जोर दिया है। हमारा सहयोग अनुसंधान को बढ़ावा देने, निदान में सुधार करने और प्रभावित व्यक्तियों के लिए बेहतर परिणाम सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है।

एशियन पैसिफिक एसोसिएशन ऑफ गैस्ट्रोएंटरोलॉजी (एपीएजीई) के अध्यक्ष डॉ. चून जिन ओई ने एशियाई देशों में सीलिएक रोग के बारे में जागरूकता बढ़ाने में डॉ. मखारिया के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने आगे कहा कि एपीएजीई ने एशिया में सीलिएक रोग के बारे में सहयोग को बढ़ावा देने और जागरूकता बढ़ाने के लिए डॉ. मखरिया की अध्यक्षता में एशिया में सीलिएक रोग पर एक कार्य समूह बनाया है।

आगे जोड़ते हुए, इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर द स्टडी ऑफ सीलिएक डिजीज (आईएससीसीडी) के अध्यक्ष डॉ. रॉबर्ट पॉल एंडरसन ने कहा, ह्लजैसा कि हम सीलिएक रोग के लिए वैकल्पिक उपचार और दवाओं का पता लगाते हैं, एशियाई प्रशांत सीलिएक रोग संगोष्ठी जैसे आयोजन अनुसंधान और विकास के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बीमारी के बारे में बढ़ती जागरूकता के साथ, इस स्थिति से पीड़ित व्यक्तियों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि होने की संभावना है, जिससे ग्लूटेन-मुक्त आहार (जीएफडी) की मांग में वृद्धि होगी। इसलिए सीलिएक रोग वाले व्यक्तियों के लिए वैकल्पिक या सहायक उपचारों की खोज करने की तत्काल आवश्यकता है, और आज प्राप्त अंतर्दृष्टि इस संबंध में मदद करेगी।ह्ल

यह संगोष्ठी क्षेत्र के विशेषज्ञों के बीच सहयोग और ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा देने में एक मील का पत्थर साबित हुई है। सीलिएक रोग से उत्पन्न चुनौतियों का समाधान करने के लिए, जागरूकता बढ़ाना, नैदानिक बुनियादी ढांचे को मजबूत करना और विश्वसनीय और किफायती ग्लूटेन-मुक्त भोजन की उपलब्धता सुनिश्चित करना अनिवार्य है। सभी संबंधित हितधारकों का एक ठोस प्रयास इस बढ़ते सार्वजनिक स्वास्थ्य मुद्दे से निपटने में मदद कर सकता है।

Control India

Publication	Control India
Date	10th March 2024
Headline	Demand for solutions increased as awareness of celiac disease increased

सीलिएक रोग के प्रति जागरूकता बढ़ने से समाधान की मांग बढ़ी

नई दिल्ली (कंट्रोल इंडिया ब्यूरो)। सीलिएक रोग के प्रबंधन, निदान और उपचार के महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने वाला पहला एशियाई प्रशांत सीलिएक रोग संगोष्ठी (एपीसीडीएस 2024) हाल ही में नई दिल्ली में शुरू किया गया था। पहले दिन आयोजित सत्रों ने इस स्थिति के प्रबंधन में समय पर निदान और नवाचार के महत्व को रेखांकित किया।

संगोष्ठी का आयोजन एम्स द्वारा एशिया पैसिफिक एसोसिएशन ऑफ गैस्ट्रोएंटरोलॉजी (एपीएजीई) और इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर द स्टडी ऑफ सेलियाक डिजीज (आईएसएससीडी) के सहयोग से किया जा रहा है। सीलिएक रोग, ग्लूटेन के सेवन के कारण छोटी आंत को प्रभावित करने वाला एक ऑटोइम्यून विकार है, जिसके वैश्विक प्रसार में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। एशिया में यह असामान्य माना जाता है, हाल के अध्ययन, जिनमें एम्स द्वारा किए गए अध्ययन भी शामिल हैं, कई एशियाई देशों में सीलिएक रोग के अस्तित्व का खुलासा करते हैं। माना जाता है कि भारत में अनुमानित 6 से 8 मिलियन लोग इस स्थिति के साथ जी रहे हैं। देश में रोगियों की पर्याप्त संख्या के बावजूद, केवल एक छोटे प्रतिशत को ही औपचारिक निदान प्राप्त हुआ है।एपीसीडीएस 2024 एशिया-प्रशांत क्षेत्र में सीलिएक रोग के बढ़ते प्रसार पर चर्चा करने के लिए प्रमुख विशेषज्ञों, स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों और हितधारकों को एक साथ लाता है। इसका उद्देश्य महामारी विज्ञान, निदान, मानदंड और प्रबंधन में उभरती चुनौतियों और अवसरों का समाधान करना है। यूरोप और अमेरिका में प्रमुखता के बाद भारत जैसे एशियाई देशों में मामलों में वृद्धि के साथ, संगोष्ठी गहन चर्चा के लिए एक महत्वपूर्ण मंच होगी, जो स्थिति को सबसे आगे रखेगी और समय पर निदान और प्रबंधन की आवश्यकता होगी। इस बारे में बोलते हुए, एम्स के गैस्ट्रोएंटरोलॉजी और मानव पोषण विभाग के प्रोफेसर डॉ गोविंद मखारिया ने कहा, ह्यप्रथम एशियाई प्रशांत सीलिएक रोग संगोष्ठी ने हमारे क्षेत्र में सीलिएक रोग की उभरती चुनौतियों पर चर्चा करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान किया है। जागरूकता बढ़ाने और निदान एवं उपचार क्षमताओं को बढ़ाने के प्रयासों की आवश्यकता है। सीलिएक रोग कोई सीमा नहीं जानता, और संगोष्ठी ने इस वैश्विक स्वास्थ्य मुद्दे के समाधान के लिए एकजुट मोर्चे की आवश्यकता पर जोर दिया है। हमारा सहयोग अनुसंधान को बढ़ावा देने, निदान में सुधार करने और प्रभावित व्यक्तियों के लिए बेहतर परिणाम सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है।ह"

एशियन पैसिफिक एसोसिएशन ऑफ गैस्ट्रोएंटरोलॉजी (एपीएजीई) के अध्यक्ष डॉ. चून जिन ओई ने एशियाई देशों में सीलिएक रोग के बारे में जागरूकता बढ़ाने में डॉ. मखारिया के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने आगे कहा कि एपीएजीई ने एशिया में

सीलिएक रोग के बारे में सहयोग को बढ़ावा देने और जागरूकता बढ़ाने के लिए डॉ. मखरिया की अध्यक्षता में एशिया में सीलिएक रोग पर एक कार्य समूह बनाया है।

आगे जोड़ते हुए, इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर द स्टडी ऑफ सीलिएक डिजीज (आईएससीसीडी) के अध्यक्ष डॉ. रॉबर्ट पॉल एंड्रसन ने कहा, ह्यजैसा कि हम सीलिएक रोग के लिए वैकल्पिक उपचार और दवाओं का पता लगाते हैं, एशियाई प्रशांत सीलिएक रोग संगोष्ठी जैसे आयोजन अनुसंधान और विकास के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बीमारी के बारे में बढ़ती जागरूकता के साथ, इस स्थिति से पीड़ित व्यक्तियों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि होने की संभावना है, जिससे ग्लूटेन-मुक्त आहार (जीएफडी) की मांग में वृद्धि होगी। इसलिए सीलिएक रोग वाले व्यक्तियों के लिए वैकल्पिक या सहायक उपचारों की खोज करने की तत्काल आवश्यकता है, और आज प्राप्त अंतर्दृष्टि इस संबंध में मदद करेगी।ह

यह संगोष्ठी क्षेत्र के विशेषज्ञों के बीच सहयोग और ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा देने में एक मील का पत्थर साबित हुई है। सीलिएक रोग से उत्पन्न चुनौतियों का समाधान करने के लिए, जागरूकता बढ़ाना, नैदानिक बुनियादी ढांचे को मजबूत करना और विश्वसनीय और किफायती ग्लूटेन-मुक्त भोजन की उपलब्धता सुनिश्चित करना अनिवार्य है। सभी संबंधित हितधारकों का एक ठोस प्रयास इस बढ़ते सार्वजनिक स्वास्थ्य मुद्दे से निपटने में मदद कर सकता है।

मयूर संवाद

Publication	Mayur Samvad
Date	10th March 2024
Headline	AIIMS leads change in celiac disease management with 1st Asian Pacific Celiac Disease Symposium 2024

प्रथम एशियाई प्रशांत सीलिएक रोग संगोष्ठी 2024 के साथ एम्स सीलिएक रोग प्रबंधन में बदलाव का नेतृत्व किया

नई दिल्ली।

सीलिएक रोग के प्रबंधन, निदान और उपचार के महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने वाला पहला एशियाई प्रशांत सीलिएक रोग संगोष्ठी (एपीसीडीएस 2024) हाल ही में नई दिल्ली में शुरू किया गया था। पहले दिन आयोजित सत्रों ने इस स्थिति के प्रबंधन में समय पर निदान और नवाचार के महत्व को रेखांकित किया। संगोष्ठी का आयोजन एम्स द्वारा एशिया पैसिफिक एसोसिएशन ऑफ गैस्ट्रोएंटरोलॉजी (एपीएजीई) और इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर द स्टडी ऑफ सेलियाक डिजीज (आईएसएससीडी) के सहयोग से किया जा रहा है। सीलिएक रोग, ग्लूटेन के सेवन के कारण छोटी आंत को प्रभावित करने वाला एक ऑटोइम्यून विकार है, जिसके वैश्विक प्रसार में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। एशिया में यह

असामान्य माना जाता है, हाल के अध्ययन, जिनमें एम्स द्वारा किए गए अध्ययन भी शामिल हैं, कई एशियाई देशों में सीलिएक रोग के अस्तित्व का खुलासा करते हैं। माना जाता है कि भारत में अनुमानित 6 से 8 मिलियन लोग इस स्थिति के साथ जी रहे हैं। देश में रोगियों की पर्याप्त संख्या के बावजूद, केवल एक छोटे प्रतिशत को ही औपचारिक निदान प्राप्त हुआ है। एपीसीडीएस 2024 एशिया-प्रशांत क्षेत्र में सीलिएक रोग के बढ़ते प्रसार पर चर्चा करने के लिए प्रमुख विशेषज्ञों, स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों और हितधारकों को एक साथ लाता है। इसका उद्देश्य महामारी विज्ञान, निदान, मानदंड और प्रबंधन में उभरती चुनौतियों और अवसरों का समाधान करना है। यूरोप और अमेरिका में प्रमुखता के बाद भारत जैसे एशियाई देशों में मामलों में वृद्धि के साथ, संगोष्ठी गहन चर्चा के लिए एक महत्वपूर्ण मंच होगी, जो स्थिति को सबसे आगे रखेगी और समय पर निदान और प्रबंधन की आवश्यकता होगी।

इस बारे में बोलते हुए, एम्स के गैस्ट्रोएंटरोलॉजी और मानव पोषण विभाग के प्रोफेसर डॉ गोविंद मखारिया ने कहा, प्रथम एशियाई प्रशांत सीलिएक रोग संगोष्ठी ने हमारे क्षेत्र में सीलिएक रोग की उभरती चुनौतियों पर चर्चा करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान किया है। जागरूकता बढ़ाने और निदान एवं उपचार क्षमताओं को बढ़ाने के प्रयासों की आवश्यकता है। सीलिएक रोग कोई सीमा नहीं जानता, और संगोष्ठी ने इस वैश्विक स्वास्थ्य मुद्दे के समाधान के लिए एकजुट मोर्चे की आवश्यकता पर जोर दिया है।

हमारा सहयोग अनुसंधान को बढ़ावा देने, निदान में सुधार करने और प्रभावित व्यक्तियों के लिए बेहतर परिणाम सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है।

विराट वैभव

Publication	Virat Vaibhav
Date	11th March 2024
Headline	Spread awareness about celiac disease

सीलिएक रोग के प्रति फैलाई जागरुकता

वैभव न्यूज ■ नई दिल्ली

सीलिएक रोग के प्रबंधन निदान और उपचार के महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने वाला पहला एशियाई प्रशांत सीलिएक रोग संगोष्ठी एपीसीडीएस 2024 हाल ही में नई दिल्ली में शुरू किया गया था। पहले दिन आयोजित सत्रों ने इस स्थिति के प्रबंधन में समय पर निदान और नवाचार के महत्व को रेखांकित किया। संगोष्ठी का आयोजन एम्स द्वारा एशिया पैसिफिक एसोसिएशन ऑफ गैस्ट्रोएंटरोलॉजी (एपीएजीई) और इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर द स्टडी ऑफ सेलियाक डिजीज (आईएसएससीडी) के सहयोग से किया जा रहा है। एम्स के गैस्ट्रोएंटरोलॉजी और मानव पोषण विभाग के प्रोफेसर डॉ गोविंद मखारिया ने कहा प्रथम एशियाई प्रशांत सीलिएक रोग संगोष्ठी ने हमारे क्षेत्र में सीलिएक रोग की उभरती चुनौतियों पर चर्चा करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान किया है। जागरूकता बढ़ाने और निदान एवं उपचार क्षमताओं को बढ़ाने के प्रयासों की आवश्यकता है। सीलिएक रोग कोई सीमा नहीं जानता और संगोष्ठी ने इस वैश्विक स्वास्थ्य मुद्दे के समाधान के लिए एकजुट मोर्चे की आवश्यकता पर जोर दिया है। हमारा सहयोग अनुसंधान को बढ़ावा देने निदान में सुधार करने और प्रभावित व्यक्तियों के लिए बेहतर परिणाम सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है। एपीएजीई के अध्यक्ष डा. चून जिन ओई ने एशियाई देशों में सीलिएक रोग के बारे में जागरूकता बढ़ाने में डा. मखारिया के प्रयासों की सराहना की। आईएससीसीडी के अध्यक्ष डा. रॉबर्ट पॉल एंडरसन ने कहा जैसा कि हम सीलिएक रोग के लिए वैकल्पिक उपचार है।

Publication	Lok Bharat
Date	11th March 2024
Headline	Initiative to Change Celiac Disease Management

सीलिएक रोग प्रबंधन में बदलाव हेतु पहल

लोकभारती न्यूज ब्यूरो

नई दिल्ली। सीलिएक रोग के प्रबंधन, निदान और उपचार के महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने वाला पहला एशियाई प्रशांत सीलिएक रोग संगोष्ठी (एपीसीडीएस 2024) हाल ही में नई दिल्ली में शुरू किया गया था। पहले दिन आयोजित सत्रों ने इस स्थिति के प्रबंधन में समय पर निदान और नवाचार के महत्व को रेखांकित किया। संगोष्ठी का आयोजन एम्स द्वारा एशिया पैसिफिक एसोसिएशन ऑफ गैस्ट्रोएंटरोलॉजी (एपीएजीई) और इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर द स्टडी ऑफ सेलियाक डिजीज (आईएसएससीडी) के सहयोग से किया जा रहा है। सीलिएक रोग, ग्लूटेन के सेवन के कारण छोटी आंत को प्रभावित करने वाला एक ऑटोइम्यून विकार है, जिसके वैश्विक प्रसार में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। एशिया में यह असामान्य माना जाता है, हाल के अध्ययन, जिनमें एम्स द्वारा किए गए अध्ययन भी शामिल हैं, कई एशियाई देशों में सीलिएक रोग के अस्तित्व का खुलासा करते हैं। माना जाता है कि भारत में अनुमानित 6 से 8 मिलियन लोग इस स्थिति के साथ जी रहे हैं।

एम्स के गैस्ट्रोएंटरोलॉजी और मानव पोषण विभाग के प्रोफेसर डॉ गोविंद मखारिया ने कहा, सीलिएक रोग कोई सीमा नहीं जानता, और संगोष्ठी ने इस वैश्विक स्वास्थ्य मुद्दे के समाधान के लिए एकजुट मोर्चे की आवश्यकता पर जोर दिया है। हमारा सहयोग अनुसंधान को बढ़ावा देने, निदान में सुधार करने और प्रभावित व्यक्तियों के लिए बेहतर परिणाम सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है। एशियन पैसिफिक एसोसिएशन ऑफ गैस्ट्रोएंटरोलॉजी (एपीएजीई) के अध्यक्ष डॉ. चून जिन ओई ने एशियाई देशों में सीलिएक रोग के बारे में जागरूकता बढ़ाने में डॉ. मखारिया के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने आगे कहा कि एपीएजीई ने एशिया में सीलिएक रोग के बारे में सहयोग को बढ़ावा देने और जागरूकता बढ़ाने के लिए डॉ. मखरिया की अध्यक्षता में एशिया में सीलिएक रोग पर एक कार्य समूह बनाया है।इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर द स्टडी ऑफ सीलिएक डिजीज (आईएससीसीडी) के अध्यक्ष डॉ. रॉबर्ट पॉल एंडरसन ने कहा, "जैसा कि हम सीलिएक रोग के लिए वैकल्पिक उपचार और दवाओं का पता लगाते हैं, एशियाई प्रशांत सीलिएक रोग संगोष्ठी जैसे आयोजन अनुसंधान और विकास के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सीलिएक रोग वाले व्यक्तियों के लिए वैकल्पिक या सहायक उपचारों की खोज करने की तत्काल आवश्यकता है।

The Pioneer
March 19, 2024
Page 9

Surge in celiac disease calls for awareness

WAJIHA **MEHTAB**

The gap between prevalence and diagnosis of celiac disease underscores the urgent need for heightened awareness and improved diagnostics

Traditionally thought to be uncommon in Asia, recent studies, including those conducted by AIIMS, have shed light on the prevalence of celiac disease in many Asian countries. In India alone, an estimated 6 to 8 million people are believed to be living with the condition, yet only a fraction have received a formal diagnosis. This alarming gap between prevalence and diagnosis underscores the urgency for increased awareness and enhanced diagnostic and treatment capabilities.Celiac disease, also known as celiac sprue or gluten-sensitive enteropathy, is a chronic autoimmune disorder that affects the small intestine. It is triggered by the ingestion of dietary gluten, a protein found in wheat and barley.

When individuals with celiac disease consume gluten, their immune system responds by damaging the lining of the small intestine, leading to various gastrointestinal symptoms and potentially causing long-term health complications. Celiac disease affects approximately one per cent of the global population, although many

cases remain undiagnosed. The condition can manifest at any age, from infancy to late adulthood and can affect both genders. However, women are more prone to develop celiac disease. The first Asian Pacific Celiac Disease Symposium (APCDS 2024) commenced in New Delhi, focusing on the critical aspects of management, diagnosis and treatment of Celiac Disease.

The symposium, organised by AIIMS in collaboration with the Asia Pacific Association of Gastroenterology (APAGE) and the International Society for the Study of Celiac Disease (ISSCD), marks a pivotal moment in the fight against this autoimmune disorder. APCDS 2024 serves as a platform for leading experts, healthcare professionals, and stakeholders to address the growing prevalence of celiac disease in the Asia-Pacific region. Given the observed increase in cases across Asian countries. The establishment of timely diagnosis and management systems is crucial. Dr. Govind Makharia, Professor in the Department of Gastroenterology and Human Nutrition at AIIMS, highlighted the significance of the disease, "there is a need for concerted efforts to increase awareness and enhance diagnostic and treatment capabilities. Celiac disease knows no borders, and the symposium has emphasised the necessity for a united front in addressing this global health issue." Individuals with celiac disease may experience a range of symptoms, including:

Digestive Issues: These can include diarrhoea, constipation, abdominal pain, bloating and nausea.

Malnutrition: Damage to the small intestine can impair nutrient absorption, leading to deficiencies in vitamins, minerals, and other essential nutrients. This can result in fatigue, weight loss, anaemia and stunted growth.

Skin Problems: Some individuals with celiac disease may develop dermatitis herpetiformis, a skin rash characterised by itchy blisters.

Joint Pain: Celiac disease has been associated with joint pain and inflammation.

Neurological Symptoms: In some cases, celiac disease can cause headaches, numbness, and tingling sensations.The primary treatment for celiac disease is strict adherence to a gluten-free diet.

Along with the scientific programme in APCDS 2024, a workshop for dietitians was also organised to create infrastructure for celiac disease. Since dietitians are central in the treatment of celiac disease, it is necessary to have dietitians with in-depth knowledge about celiac disease and gluten free diet. The aim was to sensitise them with different challenges faced by patients and how to overcome them. Also, a workshop for patients was conducted to educate them about the disease and treatment protocol. Group counselling sessions were conducted by a team of dietitians and patients queries were answered.

(The author is consultant Celiac dietician, AIIMS; views are personal)